वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 280

तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत विधि एवं पूजा

–रचयित्री–
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि
श्री ज्ञानमती माताजी

– प्रकाशक –
दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.
फोन नं.- (01233) 280184, 280236

प्रथम संस्करण	श्रावण शु. 11	मूल्य
1100 प्रतियाँ	24 अगस्त 2007	10/-रु.

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

-: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :-
गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी
-: मार्गदर्शन :-
प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी
-: निर्देशन :-
पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज
-: सम्पादक :-
कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन
सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

कम्पोजिंग-ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

-कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

परमपूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा प्रस्तुत तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत की इस पुस्तक को हम उनकी शिष्या प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चंदनामती माताजी के 19वें दीक्षा दिवस (श्रावण शु. एकादशी, 24 अगस्त 2007) के उपलक्ष्य में प्रकाशित कर रहे हैं।

इस व्रत के माध्यम से आप सभी श्रद्धालु भक्तों को 24 तीर्थंकर भगवन्तों की 16 जन्मभूमि तीर्थ, 3 तप और ज्ञान कल्याणक तीर्थ, 4 निर्वाण-कल्याणक तीर्थों की परोक्षवंदना का लाभ प्राप्त होगा तथा मांगीतुंगी आदि सिद्धक्षेत्र महावीर जी अतिशय क्षेत्रों की वंदना का भी पुण्य मिलेगा।

ऊपवास अथवा एकादनपूर्वक इन 24 व्रतों को पूर्ण करके उद्यापन में संभव हो तो सभी तीर्थों की यात्रा करें अथवा जघन्यरूप में कम से कम

अयोध्या, हस्तिनापुर, कुण्डलपुर ये तीन जन्मभूमि तीर्थ एवं सम्मेदशिखर, पावापुर निर्वाणतीर्थ इन पंच तीर्थों की यात्रा अवश्य करें।

चौबीस तीर्थंकर की अथवा एक तीर्थंकर की प्रतिमा बनवाकर मंदिर में विराजमान करें, चौबीस उपकरणों को मंदिर में रखें तथा ज्ञानदानस्वरूप किसी पुस्तक को प्रकाशित कर उसका वितरण करें।

इस पुस्तक में व्रत की विधि एवं मंत्र गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी द्वारा रचित हैं एवं पूजा आर्यिका श्री चंदनामती माताजी द्वारा रचित है।

इस व्रत में तिथि का बंधन नहीं है, अर्थात् किसी भी दिन यह व्रत किया जा सकता है। एक-एक व्रत में 1-1 मंत्र का जाप्य तो करना ही है, साथ में समुच्चय मंत्र का जाप भ्झी करें और पूरे 24 मंत्र भी एक बार पढ़ लें। पूजन में पूरे अर्घ्य चढ़ाकर उस दिन परोक्ष में ही सभी तीर्थों की वंदना का पुण्य प्राप्त करें। इस व्रत को करके आप सभी पुण्यलाभ प्राप्त करें, यही मंगलकामना है।

तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत विधि एवं पूजा

-गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी

चौबीसों तीर्थंकर के गर्भ-जन्मकल्याणक, दीक्षाकल्याणक, केवलज्ञानकल्याणक एवं निर्वाण-कल्याणक के तेईस तीर्थ हैं। यह उन्हीं तेईस तीर्थों के व्रत करने की विधि है एवं एक चौबीसवाँ व्रत अन्य महापुरुषों की निर्वाणभूमि एवं अतिशय क्षेत्रों का समूहरूप है। उनका स्पष्टीकरण–

1. प्रथम तीर्थ अयोध्या – प्रथम तीर्थंकर के 2 कल्याणक, अजित, अभिनंदन, सुमति और अनंतनाथ के 4-4 कल्याणक हुए हैं। यह शाश्वत तीर्थ है।

2. श्रावस्ती – यहाँ संभवनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

3. कौशाम्बी – यहाँ पद्मप्रभुनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं, यहाँ प्रभासगिरि पर्वत पर दीक्षा एवं केवलज्ञान माने हैं यह पर्वत कौशाम्बी में ही माना है।

4. वाराणसी – सुपार्श्वनाथ के 4 कल्याणक एवं पार्श्वनाथ के तीन कल्याणक हुए हैं।

5. चंद्रपुरी – यहाँ चन्द्रप्रभनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

6. काकंदी – यहाँ पुष्पदंतनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

7. भद्रिकावती – इसे 'भद्दिलपुर' भी कहते हैं यहाँ शीतलनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

8. सिंहपुरी – इसे सारनाथ कहते हैं, यहाँ श्रेयांसनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

9. चंपापुरी – यहाँ वासुपूज्य के पाँचों कल्याणक हुए हैं। यहाँ से कुछ दूर 'मंदारगिरि' पर्वत से मोक्ष माना है। यह पर्वत चंपापुरी के अन्तर्गत ही है। इस जन्मभूमि तीर्थ व्रत के साथ ही निर्वाणभूमि का व्रत भी हो जाता है। इसीलिए चंपापुरी को अलग से निर्वाणभूमि के व्रत में नहीं लिया है।

10. कंपिलाजी – इसे कांपिल्यपुरी भी कहते हैं, यहाँ विमलनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

11. रत्नपुरी – इसे नौराही या रौनाही भी कहते हैं, यहाँ धर्मनाथ के 4 कल्याणक हुए हैं।

12. हस्तिनापुर – यहाँ भगवान शांतिनाथ, कुंथुनाथ और अरनाथ के चार-चार कल्याणक हुए हैं। ये तीनों तीर्थंकर, चक्रवर्ती एवं कामदेव पद के धारक भी हुए हैं।

13. मिथिलापुरी – यहाँ मल्लिनाथ एवं नमिनाथ के चार-चार कल्याणक हुए हैं।

14. राजगृही – यहाँ पर श्रीमुनिसुव्रतनाथ भगवान के चार कल्याणक हुए हैं।

15. शौरीपुर – यहाँ पर श्री नेमिनाथ के गर्भ-जन्म ये दो कल्याणक हुए हैं।

16. कुण्डलपुर – यहाँ महावीर स्वामी के गर्भ, जन्म एवं दीक्षा ऐसे तीन कल्याणक हुए हैं।

यहाँ तक जन्मभूमियाँ हो चुकी हैं। अब दीक्षा भूमि एवं केवलज्ञान भूमि को बताते हैं।

17. प्रयाग – यहाँ भगवान ऋषभदेव ने वटवृक्ष के नीचे दीक्षा ली थी। पुनः इसी वटवृक्ष के नीचे केवलज्ञान प्राप्त किया था। महापुराण में इसे 'पुरिमतालपुर' का उद्यान कहा है।

18. अहिच्छत्र – यहाँ भगवान पार्श्वनाथ को केवलज्ञान हुआ है। शंबर नाम के ज्योतिषी देव जो कि 10वें भव पूर्व के 'कमठ' नाम से जाना जाता है, उसने प्रभु पर उपसर्ग किया था। पुनः धरणेन्द्र देव और उनकी पद्मावती देवी ने आकर प्रभु को मस्तक पर धारण कर पुनः मस्तक पर फणा का छत्र फैलाया था। तभी उपसर्ग दूर होते ही प्रभु को केवलज्ञान हो गया था।

19. जृंभिकाग्राम – इसे 'जमुई' भी कहते हैं। यहाँ ऋजुकूला नदी के किनारे महावीर स्वामी को केवलज्ञान हुआ है।

अब निर्वाणभूमि को कहते हैं–

20. कैलाशपर्वत – इसे अष्टापद भी कहते हैं। यहाँ से श्री ऋषभदेव ने निर्वाण प्राप्त किया है। भरत-बाहुबली आदि अनेक महापुरुषों ने भी मोक्ष प्राप्त किया है।

21. सम्मेदशिखर – यहाँ से अजितनाथ आदि बीस तीर्थंकरों ने मोक्ष प्राप्त किया है। यह शाश्वत तीर्थ है।

22. गिरनार पर्वत – यहाँ पर भगवान नेमिनाथ ने दीक्षा ली है। वह 'सिरसावन' नाम से प्रसिद्ध है। पुनः यहीं केवलज्ञान प्राप्त किया है। अनंतर यहीं से मोक्ष प्राप्त किया है। इस पर्वत के 'ऊर्जयंतगिरि' एवं 'रैवतकगिरि' नाम भी हैं। यहाँ निर्वाणस्थल पर इन्द्र ने वज्र से चरणचिन्ह उत्कीर्ण किये थे, ऐसा वर्णन शास्त्रों में आया है।

23. पावापुरी – यहाँ से भगवान महावीर स्वामी ने सरोवर के मध्य में स्थित शिला से मोक्ष प्राप्त किया है। यहाँ का कमल सहित सरोवर शास्त्रों में प्रसिद्ध है।

24. मांगीतुंगी आदि सिद्धक्षेत्र तथा महावीर जी आदि अतिशय क्षेत्रों का चौबीसवां व्रत है।

इस प्रकार इन चौबीस व्रतों को करना है।

व्रत विधि–प्रत्येक व्रत में उत्तम विधि उपवास है, मध्यम विधि अल्पाहार है और जघन्य विधि एक बार शुद्ध भोजन-एकाशन है। व्रत के दिन भगवान का अभिषेक-पूजन करके इस पुस्तक में वर्णित पंचकल्याणक तीर्थ पूजा करना चाहिए। पुनः क्रम से एक-एक व्रत में एक-एक मंत्र की माला फेरना चाहिए।

इस 'पंचकल्याणक तीर्थ व्रत' को करने वाले उन-उन तीर्थों की वंदना कर सैकड़ों-हजारों आदि उपवासों का फल प्राप्त करते हैं। इस जन्म में रोग, शोक, दुःख, दारिद्रय आदि को दूर कर सुख, शांति, संपत्ति, सन्तति आदि को प्राप्त करते हैं। पुनः परम्परा से स्वर्गादि वैभव को प्राप्त करते हुए पंचकल्याणक के स्वामी तीर्थंकर पद को भी प्राप्त कर सकते हैं। इन व्रतों का फल परम्परा से निर्वाण तो निश्चित ही है। यह व्रत आप सबके लिए उत्तम फलदायी हो, यही मंगल कामना है।

तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ व्रत के चौबीस मंत्र

समुच्चय जाप्य–ॐ ह्रीं श्रीचतुर्विंशतितीर्थंकरपंचकल्याणक-पवित्र अयोध्यादिपावापुरीपर्यंततीर्थ-क्षेत्रेभ्यो नमो नमः।

1. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव-गर्भजन्म-कल्याणक-अजित-अभिनंदन-सुमति-अनन्तनाथ गर्भ-जन्म-दीक्षा-केवलज्ञान कल्याणकपवित्र शाश्वत अयोध्या-तीर्थक्षेत्राय नमः।

2. ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पवित्र श्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय नमः।

3. ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय नमः।

4. ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पार्श्वनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र वाराणसी तीर्थक्षेत्राय नमः

5. ॐ ह्रीं श्रीचंद्रप्रभतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

6. ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र काकंदीतीर्थक्षेत्राय नमः।

7. ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणक-पवित्र भद्रिकावतीतीर्थक्षेत्राय नमः।

8. ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणक-पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

9. ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यतीर्थंकर-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-निर्वाणकल्याणक-पवित्र चंपापुरी-मंदारगिरि-सिद्धक्षेत्राय नमः।

10. ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथ-गर्भ-जन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र कंपिलापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

11. ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पवित्र रत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

12. ॐ ह्रीं श्रीशांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरनाथ गर्भजन्मदीक्षा केवलज्ञान चतुश्चतुःकल्याणकपवित्र हस्तिनापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

13. ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथ-नमिनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

14. ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-कल्याणकपवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय नमः।

15. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-गर्भजन्मकल्याणकपवित्र शौरीपुरी-तीर्थक्षेत्राय नमः।

16. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामी-गर्भजन्मदीक्षा-कल्याणकपवित्र कुण्डलपुरीतीर्थक्षेत्राय नमः।

17. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव-दीक्षाकेवलज्ञानकल्याणक-पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय नमः।

18. ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ-केवलज्ञानकल्याणकपवित्र अहिच्छत्रतीर्थक्षेत्राय नमः।

19. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामि-केवलज्ञानकल्याणक-पवित्र जृंभिकाग्रामतीर्थक्षेत्राय नमः।

20. ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेव-निर्वाणकल्याणकपवित्र कैलाश-गिरिसिद्धक्षेत्राय नमः।

21. ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ-दीक्षा-केवलज्ञान-निर्वाणकल्याणक-पवित्र गिरनारसिद्धक्षेत्राय नमः।

22. ॐ ह्रीं श्रीअजितनाथ-संभवनाथ-अभिनंदननाथ-सुमतिनाथ-पद्मप्रभु-सुपार्श्व-चंद्रप्रभ-पुष्पदंत-शीतल-श्रेयांस-विमल-अनंत-धर्म-शांतिनाथ-कुंथुनाथअरनाथ-मल्लिनाथ-मुनिसुव्रतनाथ-नमिनाथ-पार्श्वनाथ-नामविंशतितीर्थंकर निर्वाण कल्याणकपवित्र श्रीसम्मेदशिखर शाश्वतसिद्धक्षेत्राय नमः।

23. ॐ ह्रीं श्रीमहावीरस्वामि-निर्वाणकल्याणकपवित्र पावापुरी-सिद्धक्षेत्राय नमः।

24. ॐ ह्रीं जंबूद्वीपसंबंधि भरतक्षेत्रस्थित मांगीतुंगीपर्वतादि-सिद्धक्षेत्र-महावीरजीपद्मपुरादि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः।

तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ पूजा

रचयित्री-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

–शंभु छंद–

श्री ऋषभदेव से महावीर तक चौबिस तीर्थंकर प्रभु हैं।
इन सबके पंचकल्याणक से पावन तेईस तीर्थ भू हैं।।
मेरा भी हो कल्याण प्रभो! मैं पंचकल्याणक तीर्थ नमूँ।
आह्वानन स्थापन एवं सन्निधीकरण विधि से प्रणमूँ।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणाम् पंचकल्याणक तीर्थसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अष्टक (शंभु छंद) –

इस जग में काल अनादी से, हर प्राणी तृषा समन्वित है।
तीरथ पद में जलधारा कर, हो सकती तृष्णा विस्मृत है।।

जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

तीरथ यात्रा से सचमुच ही, आत्मा में परमशांति मिलती।
चन्दन पूजा संसार ताप को, दूर हटा सब सुख भरती।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षयपद पाकर जिनवर ने, आत्मा को तीर्थ बना डाला।
अक्षत ले शुभ्र धवल मुट्ठी में, मैंने पुंज चढ़ा डाला।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कुछ तीर्थंकर ने ब्याह किया, कुछ ने नहिं ब्याह रचाया है।
विषयों की इच्छा तजकर ही, सबने तप को अपनाया है।।

जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्गों का भोजन भी तजकर, तीर्थंकर प्रभु ने दीक्षा ली।
हर प्राणी को दीक्षा लेने के, हेतु प्रभू ने शिक्षा दी।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज ज्ञान का दीप जलाकर प्रभु ने, जग को ज्ञान प्रकाश दिया।
हमने घृतदीप जला आरति, करके कुछ आत्मविकास किया।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

निज शुक्लध्यान की अग्नी में, कर्मों की धूप दहन करके।
जिनवर ने शिवपद पाया हम भी, धूप अग्नि में दहन करें।।

जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस मोक्षमहाफल के निमित्त, प्रभु ने उग्रोग्र तपस्या की।
उसकी अभिलाषा करके ही, हमने फल थाली अर्पित की।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध सुअक्षत पुष्प चरु, दीपक वर धूप फलादि लिया।
''चन्दनामती'' तीर्थंकर बनने, हेतु तीर्थ पद चढ़ा दिया।।
जो तीर्थभूमियाँ तीर्थंकर के, पंचकल्याण से पावन हैं।
उनकी पूजा भक्ती करने से, आत्मा होती पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक तीर्थेभ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेरछंद–

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक की भूमियाँ।
पावन हैं सभी के लिए वे तीर्थभूमियाँ।।

तीर्थों की अर्चना में शांतिधारा करूँ मैं।
निज शांति के संग विश्वशांति भाव धरूँ मैं।।10।।

शांतये शांतिधारा।

जिन उपवनों में जिनवरों ने की थी तपस्या।
सब ऋतु के फूल-फल से फलित वृक्ष थे वहाँ।।
इन पुष्पों में भी उन्हीं पुष्प की है कल्पना।
पुष्पांजली के द्वारा करूँ तीर्थ अर्चना।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।।

पंचकल्याणक तीर्थों के अर्घ्य

प्रभु ऋषभदेव की गर्भ जन्मकल्याणक भूमि अयोध्या है।
अजितेश्वर अभिनंदन के गर्भ जन्म तप ज्ञान हुए यहाँ हैं।।
श्री सुमतिनाथ व अनंतनाथ के चार कल्याणक से पावन।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ अयोध्या तीर्थ सदा है मनभावन।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवस्यतीर्थंकर गर्भजन्मकल्याणकपवित्र अजितनाथ अभिनंदननाथ सुमतिनाथ अनंतनाथतीर्थंकरा गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुः चतुःकल्याणकपवित्रशाश्वत जन्मभूमि अयोध्यातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री संभवजिन की गर्भजन्मतपज्ञानभूमि श्रावस्ती है।
जहाँ मात सुषेणा के आंगन में हुई रत्न की वृष्टी है।।
उस श्रावस्ती तीरथ को अर्घ्य चढ़ाकर पुण्य कमाना है।।
उसकी यात्रा अरु पूजा कर आत्मा को तीर्थ बनाना है।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीसंभवनाथतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणकपवित्र श्रावस्तीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जब जब प्रभु मैंने अष्टद्रव्य का स्वर्णिम थाल सजाया है।
तब तब मैंने ''चन्दनामती'' लोकोत्तर वैभव पाया है।।
कौशाम्बी नगरी पद्मप्रभू की, जन्मभूमि कहलाती है।
उन गर्भ जन्म तप और ज्ञान से, पावन मानी जाती है।।
चार कल्याणक से सहित, पावन तीर्थ महान।
कौशाम्बी व प्रभासगिरि, को दूँ अर्घ्य महान।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणकपवित्र कौशाम्बी-प्रभासगिरितीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर सुपार्श्व अरु पार्श्वनाथ के कल्याणक से पावन है।
उनके प्राचीन कथानक से, जो तीर्थ प्रसिद्ध बनारस है।।

उस तीरथ से प्रार्थना मेरी, आत्मा भी तीरथ बन जावे।
मैं अर्घ्य समर्पित करूँ प्रभो, मुझको अनर्घ्य पद मिल जावे।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुः-कल्याणकपवित्र पार्श्वनाथस्य च गर्भजन्मतपत्रिकल्याणक पवित्र वाराणसीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्द्रप्रभ जी के चार कल्याणक, से पवित्र जो नगरी है।
चिरकाल बीत जाने पर वह, वीरान हो गई नगरी है।।
लेकिन प्रभु की रज लेने, चन्द्रपुरी में भक्त पहुँचते हैं।
उस तीरथ के दर्शन कर भाव से अर्घ्य समर्पित करते हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणक पवित्र चन्द्रपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेरछंद–

श्री पुष्पदंत जिनवर के चार कल्याणक।
काकन्दि में हुए अतः वह तीर्थ नमूँ नित।।
देवों ने आकर के वहाँ उत्सव बहुत किया।
ले अर्घ्य थाल तीर्थ को मैंने चढ़ा दिया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपुष्पदंतनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाज्ञानचतुः-कल्याणक पवित्र काकन्दीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ पर श्री शीतलनाथ प्रभू के चार हुए कल्याणक हैं।
उस भद्दिलपुर का कण-कण भी, पावन व पूज्य अद्यावधि है।।
चारों कल्याणक से पवित्र, तीरथ को नमन हमारा है।
श्रद्धा भक्ति के साथ समर्पित, यह शुभ अर्घ्य हमारा है।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीशीतलनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-चतुःकल्याणक पवित्र भद्दिलपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेयांसनाथ के गर्भ जन्म तप, चार कल्याणक हुए जहाँ।
वह सिंहपुरी है सारनाथ जो, तीर्थ बनारस पास कहा।
चारों कल्याणक से पवित्र श्री सिंहपुरी को वंदन है।
यह अर्घ्य समर्पित कर चाहूँ, तीरथ पूजन का शुभ फल मैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्रीश्रेयांसनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञानचतुः-कल्याणक पवित्र सिंहपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–शेरछंद–

चम्पापुरी इक मात्र ऐसा तीर्थ है पावन।
जहाँ वासुपूज्य प्रभु के हुए पाँचों कल्याणक।।

चम्पापुरी में ही कहा मंदारगिरि स्थल।
पूजूँ जहाँ प्रसिद्ध वासुपूज्य धर्मस्थल।।9।।

ॐ ह्रीं श्रीवासुपूज्यनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-मोक्ष-पंचकल्याणक पवित्र चम्पापुरी तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री विमलनाथ तेरहवें तीर्थंकर का अर्चन करना है।
उनके चारों कल्याणक से, पावन तीरथ को भजना है।।
उस कम्पिल जी में अद्यावधि, प्राचीन कथानक मिलता है।
उसको शुभ अर्घ्य चढ़ाने से, निज मन का उपवन खिलता है।।10।।

ॐ ह्रीं श्रीविमलनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवलज्ञान-चतुःकल्याणक पवित्र कम्पिलपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पन्द्रहवें जिनवर धर्मनाथ के, जहाँ चार कल्याण हुए।
जिनधर्मतीर्थ संचालित करके, वे तिहुं जग में मान्य हुए।
मैं उन चारों कल्याणक से, पावन धरती को नमन करूँ।
ले अष्टद्रव्य का थाल, रत्नपुरि तीरथ का मैं यजन करूँ।।11।।

ॐ ह्रीं श्रीधर्मनाथतीर्थंकर गर्भजन्मतपज्ञानचतुःकल्याणक पवित्र रत्नपुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जहाँ तीर्थंकरत्रय कामदेव, चक्री पद के धारी जन्मे।
छह खंड जीतकर हस्तिनागपुर नगरी के राजा वे बने।।

उस भू पर उनके चार-चार कल्याणक इन्द्र मनाते थे।
वह तीर्थ जजूँ मैं अर्घ्य चढ़ा, जिसकी महिमा सुर गाते थे।।12।

ॐ ह्रीं तीर्थंकरश्रीशांतिनाथकुंथुनाथअरनाथजिनेन्द्राणां गर्भजन्मतपज्ञान चतुःचतुःकल्याणकपवित्र हस्तिनापुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मिथिलापुरि की जिस धरती पर, श्री मल्लि व नमिप्रभु जन्मे हैं
उन दोनों प्रभु के गर्भ जन्म, तप ज्ञान कल्याण वहीं पे हैं।।
उस नगरी को मैं अर्घ्य चढ़ाकर, एक यही प्रार्थना करूँ।
रत्नत्रय निधि हो पूर्ण मेरी, तब भव सन्तति खंडना करूँ।।13।।

ॐ ह्रीं श्रीमल्लिनाथनमिनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षा-केवलज्ञान चतुःचतुःकल्याणकपवित्र मिथिलापुरीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–रोला छंद –

मुनिसुव्रत भगवान, के चारों कल्याणक।
हुए राजगृह माँहि, अतः धरा वह पावन।।
ले पूर्णार्घ्य सुथाल, श्रद्धा सहित चढ़ाऊँ।
मन का मैल उतार, तीरथ का फल पाऊँ।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथतीर्थंकर गर्भजन्मदीक्षाकेवल-ज्ञानचतुःकल्याणक-पवित्र राजगृहीतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गर्भ जन्म प्रभु नेमि के, हुए जहाँ सुपवित्र।
अर्घ्य चढ़ा अर्चन करूँ, शौरीपुर की नित्य।।15।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर गर्भजन्मकल्याणकपवित्र-शौरीपुरतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस नगरी की रज महावीर के, तीन कल्याण से पावन है।
जहाँ इन्द्र-इन्द्राणी की भक्ती का, सदा महकता सावन है।।
उस कुण्डलपुर में नंद्यावर्त, महल का सुन्दर परिसर है।
मैं अर्घ्य चढ़ाकर नमूँ वहाँ, प्रभु वीर की प्रतिमा मनहर है।।16।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरजिनेन्द्रगर्भजन्मदीक्षाकल्याणकपवित्र कुण्डलपुर-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(17)

प्रभु ऋषभदेव की दीक्षा एवं ज्ञानभूमि का अर्चन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।टेक.।

युग की आदी में सर्वप्रथम, जब केशलोंच की क्रिया हुई।
उत्कृष्ट महाव्रत धारण करने, की पहली प्रक्रिया हुई।।
वह भूमि प्रयाग बनी तब से, उसको मेरा शत वन्दन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।1।।

वहीं पुरिमतालपुर उपवन में, जिनवर को केवलज्ञान हुआ।
इक सहस वर्ष तप करने के, पश्चात् उन्हें यह लाभ हुआ।
देवों ने समवसरण रचना में, बैठ किया प्रभु अर्चन है।
तीरथ प्रयाग के प्रति मेरा, श्रद्धायुत भाव समर्पण है।।2।।

त्याग प्रकृष्ट हुआ जहाँ, वह है तीर्थ प्रयाग।
उस तीरथ की अर्चना, भरे धर्म अनुराग।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर दीक्षाकल्याणककेवलज्ञान-कल्याणक पवित्र प्रयागतीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु पार्श्वनाथ पर जहाँ कमठचर देव ने आ उपसर्ग किया।
धरणेन्द्र व पद्मावती ने प्रभु को उठा शीश पर छत्र किया।।
उस केवलज्ञान कल्याणक तीरथ अहिच्छत्र को वन्दन है।
भूगर्भ से निकली पार्श्वनाथ प्रतिमा को अर्घ्य समर्पण है।।18।

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथतीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणकपवित्र अहिच्छत्र-तीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(19)

कुण्डलपुर निकट जृंभिका में, ऋजुकूला तट पर ज्ञान हुआ।
उसके ऊपर गगनांगण में, प्रभु समवसरण निर्माण हुआ।।

मैं केवलज्ञान कल्याणक की, भूमी का नित्य यजन कर लूँ।
सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हेतु, प्रभु वीर को मैं वंदन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर केवलज्ञानकल्याणकपवित्र जृंभिकातीर्थक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(20)

ऋषभदेव निर्वाणभूमि, कैलाशगिरी को नम लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु को सुमिरन कर लो।।
प्रभू की जय जय जय, प्रभू की जय जय जय.।।टेक.।।
भरतचक्रवर्ती निर्मित जहाँ है त्रिकाल चौबीसी।
उस गिरिवर के अष्टापद से, पाई प्रभु ने सिद्धी।।
अर्घ्य थाल उस गिरि के सम्मुख, सब मिल अर्पण कर लो।
पूजन के माध्यम से अपने, प्रभु को सुमिरन कर लो।।
बोलो जय जय जय, बोलो जय जय जय.।।

ॐ ह्रीं श्रीऋषभदेवतीर्थंकर निर्वाणभूमि कैलाशपर्वत-सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(21)

सिद्धक्षेत्र गिरनारगिरी, गुजरात प्रान्त का तीरथ है।
प्रभु नेमिनाथ के मोक्षगमन से, पावन उसकी कीरत है।।

तप, ज्ञान और निर्वाण तीन, कल्याणक स्थल को वंदूं।
राजुलमति की भी तपोभूमि, सिरसा वन का अर्चन कर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथतीर्थंकर दीक्षाकेवलज्ञानमोक्ष-कल्याणकपवित्र गिरनारगिरि सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(22)

जिस वसुधा से प्रभु महावीर ने, अष्टम वसुधा प्राप्त किया।
"चन्दनामती" उस वसुधा को, दे अर्घ्य सहज सुख प्राप्त हुआ।
निर्वाणभूमि पावापुर का, अर्चन सबको सुखकारी है।
सरवर विच निर्मित जलमंदिर का, दर्शन निज हितकारी है।

ॐ ह्रीं श्रीमहावीरतीर्थंकर निर्वाणकल्याणकपवित्र पावापुरी सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(23)

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, शाश्वत सिद्धक्षेत्र जग में।
एक बार जो करे वंदना, वह भी पुण्यवान सच में।।
ऊँचा पर्वत पार्श्वनाथ हिल, नाम से जाना जाता है।
जिनशासन का सबसे पावन, तीरथ माना जाता है।।1।।

बीस तीर्थंकर इस पर्वत से, कर्म नाशकर मोक्ष गये।
लेकिन इससे पूर्व अनंतानंत, जिनेश्वर मोक्ष गये।।

इसीलिए यह अनादि अनिधन, तीर्थ पूज्य कहलाता है।
इस गिरि के वंदन-अर्चन से ही, स्वर्ग-मोक्ष मिल जाता है।।2।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन विंशतितीर्थंकराणां निर्वाणकल्याणक-पवित्रशाश्वततीर्थसम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री मांगीतुंगी आदि सिद्धक्षेत्रों को नमन हमारा है।
श्री महावीर जी महावीर प्रभू के अतिशय से प्यारा है।।
ऐसे ही पदमपुरा आदिक अतिशय क्षेत्रों को वंदन है।
इन सबको अर्घ्य चढ़ाकरके कर्मों का कर लूँ खंडन मैं।।24।।

ॐ ह्रीं मांगीतुंगीआदि सिद्धक्षेत्रमहावीरजीपदमपुरा आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–पूर्णार्घ्य–

सोलह जन्मभूमि त्रय दीक्षा केवलज्ञान के तीरथ हैं।
निर्वाणभूमि के चार पृथक् ही सिद्धक्षेत्र के तीरथ हैं।।
चौबीसों तीर्थंकर के पंचकल्याणक तीर्थों को वंदूँ।
कुछ सिद्धक्षेत्र अतिशय क्षेत्रों को नमन करूँ भवदुख खंडूं।।25।।

ॐ ह्रीं वर्तमानकालीन चतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणकतीर्थ अन्यसिद्धक्षेत्रअतिशयक्षेत्रेभ्यो पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।।

जयमाला

जो भवसमुद्र से तिरवाता, वह तीर्थ कहा जाता जग में।
वह द्रव्य तीर्थ औ भावतीर्थ, दो रूप कहा जिन आगम में।।
तीर्थंकर के जन्मादिक से, पावन हैं द्रव्यतीर्थ सच में।
हर प्राणी की आत्मा परमात्मा भावतीर्थ मानी जग में।।1।।

जय जय तीर्थंकर तीर्थनाथ, तुम धर्मतीर्थ के कर्ता हो।
जय जय चौबीस जिनेश्वर तुम, त्रिभुवन गुणमणि के भर्ता हो।।
जय ऋषभदेव से वीर प्रभू तक, सबकी महिमा न्यारी है।
इन पंचकल्याणक के तीर्थों को, नितप्रति धोक हमारी है।।2।।

चौबीसों जिन की जन्मभूमि का, अतिशय ग्रंथों में आया।
जहाँ पन्द्रह-पन्द्रह मास रतन-वृष्टि सुरेन्द्र ने करवाया।।
वह तीर्थ अयोध्या प्रथम तथा, कुण्डलपुर जन्मभूमि अन्तिम।
जहाँ तीर्थंकर माताओं ने, देखे सोलह सपने स्वर्णिम।।3।।

यूँ तो सब तीर्थंकर की शाश्वत जन्मभूमि है अवधपुरी।
लेकिन हुण्डावसर्पिणी में हो गईं पृथक् ये जन्मथली।।
इस कारण तीजे काल में ही, हुई कर्मभूमि प्रारंभ यहाँ।
तब नगरि अयोध्या धन्य हुई, हुआ प्रथम प्रभू का जन्म जहाँ।।4।।

उस शाश्वत तीर्थ अयोध्या में, इस युग के पाँच प्रभू जन्में।
ऋषभेश अजित अभिनंदन एवं, सुमति अनंत उन्हें प्रणमें।।
गणधर मुनि एवं इन्द्र आदि से, वंद्य अयोध्या नगरी है।
वृषभेश्वर की ऊँची प्रतिमा, जहाँ तीर्थ की महिमा कहती है।।5।।

इन जन्मभूमियों की श्रेणी में, श्रावस्ती संभव प्रभु की।
कौशाम्बी पद्मप्रभ की वाराणसि सुपार्श्व पारस प्रभु की।।
चन्द्रप्रभ जन्में चन्द्रपुरी में, पुष्पदन्त काकन्दी में।
भद्रिकापुरी में शीतल जिन, जन्मे श्रेयाँस सिंहपुरि में।।6।।

चम्पापुर नगरी वासुपूज्य की, जन्मभूमि से पावन है।
पाँचों कल्याणक से केवल, चम्पापुर ही मनभावन है।।
कम्पिलापुरी में विमलनाथ, है धर्मनाथ की रत्नपुरी।
श्रीशांति कुंथु अरनाथ तीन की, जन्मभूहिस्तिनापुरी।।7।।

मिथिलानगरी में मल्लिनाथ, नमिनाथ जिनेश्वर जन्मे हैं।
मुनिसुव्रत जिनवर राजगृही, नेमी प्रभु शौरीपुर में हैं।।
कुण्डलपुर में महावीर प्रभू का, नंद्यावर्त महल सुन्दर।
प्राचीन छवी के ही प्रतीक में, ऊँचा बना सात मंजिल।।8।।

ये सोलह तीर्थ सभी तीर्थंकर, के जन्मों से पावन हैं।
ये गर्भ जन्म तप ज्ञान चार, कल्याणक से भी पावन हैं।।
इनके वन्दन से निज घर में, लक्ष्मी का वास हुआ करता।
इनके वन्दन से आतम में, सुख शांती लाभ हुआ करता।।9।।

पूर्णार्घ्य महार्घ्य समर्पण कर, सब तीर्थ भाव से नमन करो।
पूजन का फल पाने हेतू, सब राग द्वेष को शमन करो।।
ज्यों राजहंस से मानसरोवर, की पहचान कही जाती।
त्यों ही जिनवर जन्मों से धरती, पावन पूज्य कही जाती।।10।।

तीरथ प्रयाग में ऋषभदेव के दीक्षाज्ञान कल्याणक हैं।
अहिछत्र तीर्थ पर पार्श्वनाथ का हुआ ज्ञानकल्याणक है।।
जृंभिका ग्राम में ऋजुकूला नदि के तट पर महावीर प्रभू।
कैवल्यधाम को प्राप्त हुए, कर घातिकर्म का नाश प्रभू।।11।।

कैलाशगिरी से ऋषभदेव ने, मुक्तिश्री का वरण किया।
चम्पापुर से प्रभु वासुपूज्य ने, मोक्षधाम में गमन किया।।
गिरनार तीर्थ से नेमिनाथ, पावापुरि से महावीर प्रभू।
सम्मेदशिखर पर तप करके, निर्वाण गये हैं बीस प्रभू।।12।।

यूँ तो जिनआगम में केवल, दो ही माने शाश्वत तीरथ।
शुभतीर्थ अयोध्या जन्मभूमि, निर्वाणभूमि सम्मेदशिखर।
पहले के सब तीर्थंकर नगरि अयोध्या में ही जनमते थे।
फिर कर्मनाश सम्मेदशिखर से मुक्तिप्रिया को वरते थे।।13।।

निज जन्मभूमि से अलग ऋषभ प्रभु नेमिनाथ ने दीक्षा ली।
बाकी बाइस तीर्थंकर ने निज जन्मभूमि में दीक्षा ली।।
ऐसे ही तीन जिनेश्वर को अन्यत्र सु केवलज्ञान हुआ।
श्री ऋषभ-पार्श्व-महावीर प्रभू का समवसरण निर्माण हुआ।।14।।

इन पंचकल्याणक तीर्थों को है मेरा बारम्बार नमन।
इन तीर्थों का व्रत भी करके कर लूँ तीर्थंकर का अर्चन।।
मेरी आत्मा भी तीर्थ बने, मैं तीर्थंकर पद को पाऊँ।
कर धर्मतीर्थ का वर्तन मैं शाश्वत सुख में बस रम जाऊँ।।15।।

इस युग की गणिनीप्रमुख ज्ञानमति माता की प्रेरणा मिली।
कल्याणक तीर्थों का विकास करने की नव चेतना मिली।।
उनकी शिष्या आर्यिका ''चन्दनामति'' की है याचना यही।
शिवपद पाने तक तीर्थों के प्रति भक्ति रहे भावना यही।।16।।

–दोहा–

शब्दों की जयमाल यह, अर्पूं जिनपद मांहि।
अष्टद्रव्य का थाल ले, अर्घ्य चढ़ाऊँ आय।।17।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तचतुर्विंशतितीर्थंकराणां पंचकल्याणक-तीर्थेभ्यः जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–शेर छंद–

तीर्थंकरों के पंचकल्याणक जो तीर्थ हैं।
उनकी यशोगाथा से जो जीवन्त तीर्थ हैं।।
निज आत्म के कल्याण हेतु उनको मैं जजूँ।
फिर ''चन्दनामती'' पुनः भव वन में ना फंसूँ।।

।। इत्याशीर्वादः।।